2/11/21

आदर्श बदला

1) तानसेन कौन था? उसने क्या नियम बना रखा था?

उ: तानसेन अकबर के दरबार का प्रसिद्ध गवैया था। उसने यह नियम बना रखा था कि जो उसका मुकाबला न कर सके उसे आगरे में न आने दिया जाए। इस नियम को न मानने वाले को प्राणदंड दिया जाएगा।

2) बैजू बावरा कौन था? उसने संगीत में दक्षता कैसे पायी?

उ:- बैजू बावरा ने बेसहारा लड़का था जिसके पिता की हत्या तानसेन के बनाए गए नियम के कारण हुई। उसने बाबा शंकरानंद के द्वारा संगीत में दक्षता पाई।

3) बैजू ~~बावरा~~ बावरा तानसेन से बदला क्यों लेना चाहता था?

उ:- तानसेन ने बैजू बावरा के पिता ~~की~~ की हत्या

अपने दवारा बनाए गए क्रूर नियम के हत्या करवाई। इसलिए बैजू बावरा तानसेन से बदला लेना चाहता था।

4) बैजू ने तानसेन को कैसे हराया?

उ:- बैजू ने अपनी संगीतविद्या से वन के हिरणों को मोहित कर लिया और माला पहनाई। यही कार्य तानसेन को करना था जो कि वह न कर सका। इस प्रकार बैजू ने तानसेन को हराया।

5) बैजू बावरा ने तानसेन के प्राणदान के बदले क्या शर्त रखी?

उ:- बैजू बावरा ने तानसेन को प्राणदान देते हुए यह शर्त रखी की उस कठोर नियम को समाप्त कर दिया जाए, जिसके कारण उसके पिता के हत्या हुई थी।

Extra question

1) आगरे पर किसका शासन था?

उ:- आगरे पर अकबर का शासन था।

2) बालक की आयु कितनी थी?

उ:- बालक की आयु दस वर्ष थी।

3) बालक को कितने संगीत की दीक्षा दी?

उ:- बालक को बाबा शंकरानंद ने संगीत की दीक्षा दी।

4) बैजू ने किस वर्ष की उम्र में अपने पिता को खो दिया?

उ:- बैजू ने अपने पिता को दस वर्ष की उम्र में खो दिया?

5) बैजू ने कितने वर्ष के बाद तानसेन को पराजित किया?

उ:- बैजू ने 12 वर्ष के बाद तानसेन को पराजित किया।

6) बैजू ने कौन सा वाद्य बजाया?

उ:- बैजू ने सितार बजाया।

7) बैजू ने अपने संगीत के द्वारा किस बुलाया?

उ:- बैजू ने अपने संगीत के द्वारा हिरणों को बुलाया।

8) इस कहानी के लेखक कौन है?

उ:- इस कहानी के लेखक सुदर्शन जी है।

आदर्श बदला का सारांश

प्रस्तुत कहानी एक ऐसे कलाकार के पर आधारित है जिसके पिता की मृत्यु तानसेन के निष्ठुर निर्णय के कारण हुई। दस वर्ष की उम्र में उसने तानसेन से बदला लेना चाहा, किंतु उसके पास पूर्ण ज्ञान न था; उसे गुरु के रूप में लाबा शंकरानंद मिल गए। उन्होंने दस वर्ष की कठिन मेहनत से बैजू को एक अच्छा संगीतकार बना दिया। अब बैजू के स्वर में इतना आकर्षण था कि जानवर भी मुग्ध हो जाते थे।

एक दिन बैजू आमबे में विशाल

जनसमूह के साथ दाखिल हुआ। वहीं पर उसने अपने संगीत के द्वारा हिरनों को बुला लिया और उनके गले में माला पहनादी। यही कार्य उसने तानसेन को करने को कहा जो कि वह न कर पाया। तानसेन की पराजय और बैजू की जीत का फैसला अकबर ने सुना दिया। तानसेन ने अपनी मृत्यु देखकर बैजू से क्षमा मांगी। बैजू ने इसके निकट बदले में उस नियम को तोड़ने को कहा जिसके कारण तानसेन के अलावा आगरा कोई नहीं आ सकता। तानसेन की बराबरी न कर पाने पर मृत्युदंड का आदेश था। तानसेन को बचाने के लिए अकबर ने यह नियम तोड़ दिया।

इस प्रकार बैजू बावरा ने अपने पिता की हत्या का बदला लिया।